

निमः शुद्ध शुद्ध वरा

दशपिंथ यविधि

१६८१

१ वंद्यादभयिलुथयक्रसक्रनधूनकविधि॥ ॥
नकसङ्गव१ निद्रुकृद्ग्व१ ध्रुक्कृद्ग्व१ थक्रकृ
द्ग्व१ दाक्रकृद्ग्व३ षूक्रकृद्ग्व१ जमक्रकृद्ग्व
२ ॥ ॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दभयिलुथः

यविप्रिमाह ॥ इवास्मि ॥ यानं गवः खिनं गडा ॥
 येन रुनाद आचक ॥ इडायाजवस इद्रुस विमिना
 नः स्वडासुर्लद्वसनीमनामः धनिस्त्रायनयायः यः
 नद्वयाः सूचीमनासः कननक ॥ ॥ इवजगड

न्यासत्रयं जलपात्रं मिदं यथा कुरु नमः ॥
लक्ष्मिस्तुतिं नमस्तु कुरु नमः ॥ उदधियागमिदः
मासयुक्तं नमः ॥ ॥ इदं नमस्तु कुरु नमः ॥
धनं लिखेत्तु वा उक्तं कुरु नमः ॥ ॥ उदधियागमिदः

॥ नमस्तुतिं नमस्तु कुरु नमः ॥
॥ उदधियागमिदः ॥
॥ नमस्तुतिं नमस्तु कुरु नमः ॥
॥ उदधियागमिदः ॥
॥ नमस्तुतिं नमस्तु कुरु नमः ॥
॥ उदधियागमिदः ॥

ॐ ॥ वाक् ॥ ॐ नमो रोगवर्गं वंशचनयुक्तं रुग्णं
यस्तथा गगाया इह न सम्यक् वृद्धयि ॥ गद्यथा ॥ ॐ सुम
समय २ सान् २ दान् २ ज्ञयस्मात्वाय नीजान्वं निजा
कृत्वा निवानजसवगिसदा गङ्गा सर्ववृद्धानां धिष्ठि गन

मस्वाहा ॥ यनद्येन कस्मिन् ॥ ॐ वृज्जिह्वं ॥ इह ग ॥ ॐ
ज्जिह्वं ॥ यथा हि जागमात्यन त्यादि ॥ च ग सिधु ज्ज
म स्वाननयके ॥ वाक् ॥ यथ ॥ ॐ मदाश्मभानाधियगिस
वृद्धि गियनि ॥ यन चेत्यरुहानकचदनसिधु नरुध

ॐ स्वाहा ॥ देवराशुकोवाक्येयकाय ॥ रुल सुनने
वेद ध्रुय दियादी सकल गायोवाक्येय ॥ ॥ धन
नी ॥ जम धन संयुजायाय दूद गस्ये ये लसदायक ॥ वाक
थ ॥ यमया भविभा धर्याय यमयनु निहयग ॥ यमदा

नं विनिर्मुक्तं गालिमां भल हा ४ गुर्यं ॥ धंली ॥ किनन के
॥ डं मुं रमदा मुनय स्वाहा ॥ डं नभार गवग सर्व इन्
गिय विष्णु धन न जाय न था ग नाया इक सम्य कं वृद्ध
य ॥ नश था ॥ डं विष्णु धन र विष्णु धन र सर्वयाय विष्णु

धनं सुखं विमलं दिवं गङ्गां भूम्क नाम (अथ) याय स
विक्रमा वनहा विष्णु धनं स्वधा ॥ इ न माय ४ धर्म ना
जाय गुह्यं रुढि कर्म कर्म मर्ग जय रास्व नं सुधिया
यस्य ४ गङ्गा मा चया मिठा न न ग्या ॥ दधि (न) मदि

षात्रुं कुरु वरुणं विक्रमं दल्लु रुरु मदाया चंयु गाधि
य निमदाधिकं रावय त्मनर्ग निर्य धर्म ना ज न म मु क ॥
धनं द वया ह्म डी नय निमान (थं) वा क स्व गु नी चाय ३ ॥
धन का क यि गु खान यि गु नि धय क् कृष्ण वयर्ग गय

कं ॥ अश्वयुषानयिना जूम्कनाम आयाय युथममिल
संसिद्धं थं का कयिष्ठाय स्नानयिष्ठाय कृष्णमनमूयनि
स्तिगां ॥ लयनं तय ॥ यनामनं संयुक्तमिच्छा ॥ लह्वनः
दायकं ॥ अश्वयुषानयिना जूम्कनाम आयाय युथममिल

कं ॥ वसुधायिष्ठाय कृष्णमनमूयनि
गस्यं जाङ्गायकं जाङ्गायकं ॥ अश्वयुषानयिना
जूम्कनाम आयाय युथममिल संसिद्धं थं का
कयिष्ठाय ॥ स्नानयिष्ठाय कृष्णमनमूयनि
दयुस

यगयिनुथयक विष्णुव ३ काकयिनु स्वानयिनु य
गयिनु सुधां निगंथु निवाथयक मान ॥ यगयिनुथय
कयार ॥ कुम्भत्रय पवित्रमहंग ॥ इयगां सही स्वधा ॥
लंघनदाय ॥ इयगु कुम्भयगियद स्वधा ॥ लादागनंथि

यक ॥ इवसु धनीयगियागय स्वधा ॥ जाग्वत्त धनक
किदासु गस्य जाज्ञानक जाग्वत्त जा नक वाक् ॥ अयय
षागयिगा अमूकनाम श्रयाय यथमंघि नमूद्विर्मसिध
यगयिनु स्वधा ॥ १ ॥ निद्रया ॥ अयत्यादि अमूकना

मञ्जया यदि गीय चरु चरु वसंति श्रुदि गीय यि नुं
स्वधा ॥ २ ॥ ह गीय नासि का संति श्रु ह गीय यि नुं स्व
धा ॥ ३ ॥ चतुर्थं लुगं संति श्रु चतुर्थं यि नुं स्वधा ॥
४ ॥ यश्च मद्रदय संति श्रु यश्च मयि नुं स्वधा ॥ ५ ॥

षष्ठं मद्रसु संति श्रु षष्ठं मयि नुं स्वधा ॥ ६ ॥ सप्तमं न
हिसंति श्रु सप्तमं यि नुं स्वधा ॥ ७ ॥ अष्टमं नेदिय सं
ति श्रु अष्टमं यि नुं स्वधा ॥ ८ ॥ नवमं याद संति श्रु नव
मयि नुं स्वधा ॥ ९ ॥ दशमं लाम संति श्रु दशमं संति श्रु

दशमयिष्ठं स्वधा ॥ १० ॥ वाक्कायजिह्वायां उल्लिख्य
शयूष्मानं गङ्गाडाकायमाल ॥ काकयिष्ठं स्थानयिष्ठं जि
ह्वामाल ॥ दशमलक्ष्मालं ह्य इह सुकतां थूस्थं विनविधि
थं ॥ दशमलक्ष्मालं ह्यसंगयाडा कायलालं ह्यविय ॥ वाक्का

थं ॥ यथमसिन्धुमूर्ध्नि संस्थितं यिष्ठं निलादकं गम्भी
स्वधा ३ ॥ मलजाणां धनयक ॥ चित्तं सिद्धं जजमस्या
न रुच्यं रुच्यं मूर्धादि मधिमरा ननक ॥ वाक्कायमनज
ग्राथं दिनयनिष्ठं माल नाय शूक ननहायक ॥ दश

मम चयक ॥ मलुलथि नक खानननक ॥ ५० मूनरमदा ॥
मूनरयखादा ॥ मानका गेययाय ॥ तिलाइत्ययनमूत्रि क
लायुलमग चइषा ॥ मधुचनामिका वाइंजी नाजालमय
युनायन ॥ यधिवकठि जानूयां नायनदसुयायया ॥

अनादोसर्वगमय जायगवृद्धवीर्यवानराधनयु
नाजालिविना अइकाय जायकसर्वसखायादि ॥
वाधनलीकू गेलासल नयाडागाहायानसखाकदू
यक ॥ लय काम लयमहाधा नायादि ॥ वाविसर्जन ॥

हृन्नावल्यादि॥ आदनरत्यादि॥ दण्डविज्ञाचक॥
युगयिलुंगरुधं, काकयिलुं स्नानयिलुंगरुधं
स्वध॥ ठाचक॥ चयककाय॥ पापदभनायय॥
मावह्ययक॥ यिलुथयाथसरि नहायक, यंचवि

दिनहायक॥ काकयिलुं युदानन, कायगृद्धिचदकुना
निस्रुस्रुनाचवगमाकाकयिलुं संयुद्धामिस्वध
स्नानयिलुं युदानन, धर्ममाद्धययदभग, गस्यास्नानयिलुं
संयुद्धामिस्वध॥ युगभनीयमाचनार, दभयिलुं युका

